सड़क सुरक्षा प्रबंधन में सड़क संकेतांकों का सामाजिक महत्व ग्वालियर के विशेष संदर्भ में

डॉ. (श्रीमती) साधना तोमर
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र
विजयाराजे कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मुरार ग्वालियर (म.प्र.)

अनिल कुमार गोयल
शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर (म.प्र.)

मुख्य शब्द:
संकेतांक
प्रबंधन
सुरक्षा
सड़क संरचना

शोध-सार

शहरों में बढ़ते यातायात के साधनों ने सड़क सुरक्षा प्रबंधन का महत्व बढ़ा दिया है सड़क सुरक्षा के लिये सड़कों का प्रबंधन उचित रूप से करना पड़ेगा, साथ ही शहर के नागरिकों को भी सड़क प्रबंधन में सहयोग करना, होगा, जब तक सड़क उपयोगकर्ता, सड़क सुरक्षा के उपायों को उपयोग नहीं करेगें शहर का सड़क सुरक्षा प्रबंध उचित नहीं हो सकता।

कोई भी व्यक्ति जो पहली बार सड़क पर वाहन चलाने के लिये जा रहा है उसे पहले सड़क क नियमों की जानकारी हानी चाहिए, सड़क पर बने सुरक्षा के चिन्ह सड़क पर चलने वाले यात्रियों को सुरक्षित रखने में मददगार होते हैं, सभी को सड़क का उपयोग करने से पहले चिन्हों के बारे में पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। ग्वालियर शहर में सड़कों, चौराहे एवम् मोड़ो पर तीन प्रकार चिन्ह सड़क चिन्ह पाये जो आदेशात्मक सड़क चिन्ह, संचेतात्मक सड़क चिन्हें एवम् सूचनात्मक सड़क चिन्ह सभी सड़क चिन्हों का एक विशेष दायरा और सीमा होती है।

वाहन चालकों को पालन करना करे, दुर्घटनाओं से बचे सड़क चिन्ह हमेंशा लोगों के लिये प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लाभ युक्त होते है जिससे सड़क पर चलने वाले वाहनों को नियंत्रित किया जा सकता हो तथा सकुराल वाहन चालक भी सभी सड़क चिन्हों का पालन करे और अकुशल का गतंव्य स्थान पर पहुँचे।

सड़क सुरक्षा प्रबंध एवं यातायात सड़क चिन्हों का सामाजिक मनौवैज्ञानिक महत्व में सड़क सुरक्षा के लिये सड़क संकेतों का प्रयोग करना अति आवश्यक है।

''सड़क संकेतों का संबंध काफी पुराना है, यूरोप के देशों में सड़क संकेतांक बडा महत्व रखते थे, रोम शासन काल में पूरे रोम की दूरी दर्शाने के लिये सम्पूर्ण राज्य में दूरी को दर्शनों के लिये अपने संपूर्ण राज्य में पत्थर के खम्बे लगाये गये थे जो दूरी और दिशा क बारे में अवगत कराते थे। 'मध्य युग में चौराहों पर बहुःदिशा संकेत सामान्य हो गये थे, जो शहरों और नगरों की दिशाओं को दर्शातें थे। चूंकि सड़कें सीमाओं व बाधाओं को नहीं देखती और सड़क सुरक्षा एक वैश्विक विषय है।"[1]

ग्वालियर के उपनगरों में लश्कर, मुरार, एवं ग्वालियर में वाहन चालकों की सुरक्षा के लिये सड़क संकेतांकों का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे वाहन चालक, वाहन और चलने वाले

विभिन्न यात्री सड़क पर सही तरीके से चले, सड़क संकेतांको का सही रूप से प्रयोग करे, जिससे दुर्घटनाएँ कम से कम हो और लोग मानकों के अनुसार उसका पालन करें।

सड़क सुरक्षा के लिये ग्वालियर के निम्न चौराहों पर संकेतांक लगे जो निम्नानुसार है:-

ग्वालियर	लश्कर	मुरार
हजीरा	पडाव	आकाशवाडी चौराहा
तानसेन नगर	फूलवाग	गोविन्दपुरी चौराहा
चार शहर का नाका	नदीगेट	विवेकानंद चौराहा
मल्लगढा एवं जलालपुरा	पाटनकर चौराहा	सुरेश नगर चौराहा
	महाराजबाडा	बारादरी चौराहा
	रॉक्सीपुल	7 नं. चौराहा
	गुडीगुढा का नाका	सूर्यमंदिर तिराहा
	चन्द्रवदनी नाका	भाऊसाहब पोतनीश तिराहा
	माधवनगर चौराहा	गोले का मंदिर
	हरीशंकरपुरम चौराहा	पिन्टोपार्क चौराहा
	विश्वविद्यालय चौराहा	डीडी नगर चौराहा
	नया हाईकोर्ट तिराहा	
	एस.पीआफिस तिराहा	
	तानसेन रेजीडेन्सी तिराहा	

ग्वालियर के विभिन्न उपनगरों में संकेतांक सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिये विशेष महत्व रखते हैं। इनके द्वारा अधिकतर सड़क संकेतांक शहर के वाहन चालकों को अनुशासनबद्ध बनाते है, और सड़क पर चलने समय स्वंय को सुरक्षित रखे और सड़क पर चलाने वाले को भी सुरक्षित रखते हैं।

''देश में हर वर्ष होने वाली 80 फीसदी सड़क दुर्घटनाओं की वजह भ्रष्टाचार है जिसके चलते प्रशासनिक विभाग कंडम वाहनों और गैर जानकार लोगों को ड्राइविंग लाईसेंस दे देते हैं। रही सही कसर सड़क निर्माण में हो रही धाधली की वजह से पूरी हो जाती है। मुझे अब बेहद अफसोस है कि तमाम प्रयासों के बावजूद हम इस तरह की दुर्घटनाओं पर लगाम नहीं लगा पा रहे हैं।"[2]

सड़क सुरक्षा का संबंध सामाजिक एवम् मनोवैज्ञानिक विचारधाराओं से है, सड़क सुरक्षा हमेशा मनोवैज्ञानिक गतिविधिओं से नियंत्रित रहती है, वाहन चालक को वाहन चलाते समय कुंठित, अवसाद, एवम् मनोरोग से ग्रसित नहीं होना चाहिए। शोधार्थी का शोध अध्ययन ग्वालियर शहर के विभिन्न क्षेत्रों में अवलोकन करने

पर पाया है कि विशेष रूप से युवा वर्ग वाहन चलाते समय लापरवाहीं का प्रयोग करता है जिससे कई प्रकार की दुर्घटनाएँ होती है। अच्छी सड़के, सुरक्षा, विकास को निम्न प्रारूप के माध्यम से दर्शाया जा रहा है।

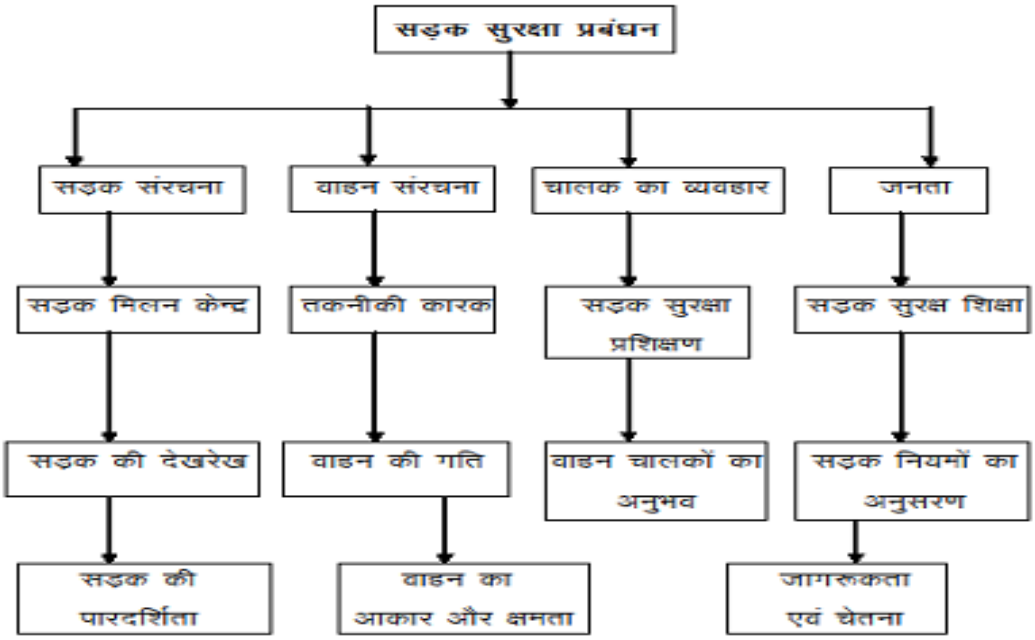

सड़क संरचना में सड़क निर्माण के समय सड़क संरचना को वाहनों के अनुरूप हो, सड़क मिलन केन्द्र को अच्छे से वैज्ञानिक तरीकों से मिलना चाहिये, सड़क की देखभाल. उचित तरीको से करना चाहिए तथा सडक पारिदर्शिता भी उचित होना चाहिये जिससे सडक पर सडक प्रयोगकर्ता को परेशानी न हो।

ग्वालियर सड़क संरचना उचित और सही नही है जिस कारण से दुर्घटना दर अधिक है सड़क संरचना तीन प्रकार की होती है सड़क मिलन विन्दु, सड़क संकेतांक, सड़क पारदर्शिता। सड़क संरचना में सड़क संकेतांक, सड़क विभाजन, शांति क्षेत्र हैं। वालियर शहर की सड़क संरचना की स्थिति उचित और प्रमाणित नही है अधिकतर सड़कों पर बडे-बड़े गड्डे पाये जाते है और इसके अलावा नगर पलिका निगम, स्मार्ट सिटी विभाग उचित देखभाल नही करता है, जिससे दुर्घटनाएँ बढ़ जाती है शहर में तीन प्रकार की सड़के है गलियों के अंदर की सड़के, विभिन्न छोटी सड़के जो सफेद पट्टी के दो भागों में बाँट दी जाती है आने वाली तथा जाने वाली जिनमें डिवाइडर का अभाव होता है तृतीय प्रकार की सड़के डिवाइडरर तथा सफेद पट्टी विभाजित की जाती है।

सड़क संरचना का संबंध सामाजिक एवम् मनोवैज्ञानिक कारकों की अध्म्य भूमि है जिसके द्वारा बहुत सी वाहनों की गति नियंत्रण आकार एवम् सड़क संरचना का आपस में एक दूसरे से समन्वय का बहुत बड़ा महत्व है, जिसने द्वारा वाहन चालक को प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

वाहन संरचना

वाहनों की गति वाहन संचालन पर निर्भर करती है जिसमें तकनीकी कारण वाहनों का आकार, उनकी क्षमता का विशेष संरचनात्मक स्वरूप है। वाहनों की संरचना और उनको नियंत्रण करने के लिए मोटर अधिनियम बनाये गये हैं। जिससे दुर्घटनाऐं कम हो । मोटर अधिनियम केन्द्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा बनाये जाते हैं। जिससे वाहनों का सही और उचित प्रयोग कर सके। वाहन संरचना के निम्न मुख्य बिन्दु है:-

1. वाहन की लम्बाई, चौडाई और उँचाई
2. टायरों और पहियों का आकार और स्थिति
3. ब्रेकसे
4. लैम्प और परातर्वत
5. चेतावनी उपकरण
6. समय-समय पर वाहनों की जाँच

वाहन संरचना के आकार के अनुसार वाहन चालक को अपनी गति का निर्धारण करना चाहिए, जिसमें मनोवैज्ञानिक कारकों का विशेष योगदान रहता है।

वाहन चालक को सड़क चिन्हों को प्राथमिकता देनी चाहिए। जिससे समन्वय सड़क संरचना, वाहन की गति तथा वाहन चालक को आपस में समन्सय होना चाहिए। ‘‘सामने से आने वाले यातायात को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, सड़क के एक संकरे भाग, जहाँ से आने व जाने वाले यातायात का एक साथ निकल पाना कठिन या असंभव हो वहां यातायात को प्राथमिकता के आधार पर संचालित करके नियंत्रित किया जाता है। इस प्रकार के नियमन को एक दिशा में यातायात के संचालन को प्राथमिकता प्रदान करने किया जाता है न कि यातायात लाइट सिग्नल लगा करके।’’

वाहन चालक का व्यहार

सड़क दुर्घटना का संबंध वाहन चालक के व्यवहार पर निर्भर करता है, वाहन चालकों के उपर विभिन्न कारकों का दबाब रहता है जैसे आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक कारक। सभी प्रकार के कारक वाहन चालक की गतिविधियों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

कारक वाहन चालक की गतिविधियों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है।

सड़क सुरक्षा प्रबंधन में सड़क यातायात के सुरक्षा संबंधी नियमों का पालन करना चाहिये जैसे हेलमेट का प्रयोग करना, सीट बेल्ट का प्रयोग करना, वाहन चालक को किसी प्रकार का नशा, जैसे एलकोहल, जश्न, वाहन चालक को समय-समय पर सड़क सुरक्षा के कार्यकमों से परिचित करना चाहिए।

‘‘गाडी चलाने समय थोड़ा सा भी ध्यान बंटने से बड़ी दुर्घटनाएँ हो सकती है। ध्यान बंटाने वाले कारण वाहन के बाहर या भीतर हो सकते है। आजकल ध्यान बंटाने वाली एक चीज है, जो वाहन चलाते समय मोवाइल फोन पर बातचीत करना, फोन पर बातचीत मस्तिष्क का एक बड़ा हिस्सा घेरती है और एक छोटा हिस्सा ड्राइविंग निपुणता में कार्यशील होता है जिससे दुर्घटनाऐं होती है।

अनुभवः- वाहन चालक के अनुभवी होना चाहिए जिससे सड़क दुर्घटनाएँ कम से कम होे। वाहन चालक को सुरक्षा कार्यकम की जानकारी होनी चाहिए जिससे कम से कम दुर्घटना हो, अनुभव की प्राप्ती हो, इसके अलावा वाहन चालक को वाहन चलाते समय आँखों की रोशनी पारदर्शी होनी चाहिए और मस्तिष्क को एफ्फान्त और सांद्रता रखना चाहिए।

भौतिक क्षमताः-

1. प्रत्येक दुर्घटना को लाइसेंस से जुडा होना चाहिए।

2. 50 वर्ष के वाहन चालक को वाहन नहीं चलना चाहिए।

3. राज्य के सभी लाइसेंसों का डिजिलिटीकरण होना चाहिए।

मोटर अधिनियम की जानकारी होनी चाहिए, जिससे वाहन चालक विभिन्न विषम समस्याओं में बच सके और किसी प्रकार की दुर्घटना न हो वाहन चलाते समय सड़क चिन्हों को एक समान तथा निरंतर रूप में स्थापित व प्रचालित किया जाना चाहिए। उन संकेतों को हटा दिया जाना चाहिए जिनकी आवश्यकता नहीं है या अब अपेक्षित नही है आवश्यकता होना के बावजूद चिन्हों को हटाने या परिवर्तन से इन्कार केवल इसलिए नहीं किया जाना चाहिए कि वह अच्छी स्थिति में नहीं है।

सुक्षाव और सिफरिशोंः-

1. ग्वालियर में सड़क दुर्घटनाऐं कम से कम हो उसके लिये आम जन को शिक्षित एवम् जागरूक करना पड़ेगा।
2. वाहन चालक को सड़क संकेतांकों का पालन करना चाहिए।
3. वाहन चालक को सीटबेल्ट, हेलमेट इन्डीकेटर, सनमिरर, साइटमिरर का प्रयोग करना चाहिए।
4. सड़क पर वाहन चलाते समय चालक मनोवैज्ञानिक रूप से सुदृढ़ होना चाहिए।
5. चालक को सड़क की स्थिति के अनुसार वाहन चलाना चाहिए।
6. वाहन चालक को गतिसीमा निश्चित रखना चाहिए, जिससे दुर्घटनाएँ कम से कम है।
7. दृश्यम का विशेष ख्याल चाहिए जिससे सड़क पर किसी प्रकार की दुर्घटना न है।

उपसंहार-

ग्वालियर के उपनगर लश्कर, मुरार एवम् ग्वालियर में लोग सड़क संकेताकों का प्रयोग करते है जिससे सड़क दुर्घटनाऐ कम हो और लोग सड़क पर वाहन चालते समय खुद को सुरक्षित रख और आम जन को बचाये, जिससे की दुर्घटनाएँ को नियंत्रित किया जा सके, शहर की सभी सड़कों पर सड़क संकेताकों का अभाव है, अवारा पशुओं का जगह-जगह झुण्ड के रूप में खण्डे रहते है जिससे कई प्रकार की दुर्घटनाओ होती है,

सड़क सुरक्षा के लिये सड़क संरचना, वाहन संरचना चालक का व्यवहार तथा जनता को सड़क सुरक्षा के अनुरूप बनना होगा जो सड़क पर चलते समय सुरक्षा दे सके। सड़क सुरक्षा प्रबंधन में जनता वाहन चालक, सडक निर्माण से जुड़ी हर इकाई को अपना कार्य पूर्णतः समर्पित होकर करना होगा, जिससे भविष्य में सड़क सुरक्षा के सभी प्रतिमानों को पूरा किया जा सके। जिससे सड़क सुरक्षा प्रबंध एवं सड़क यातायात चिन्हों का उपयोग कर मनुष्य सड़क पर आराम दायक सफर कर सके।

संदर्भ सूची -

1. यातायात चिन्ह जो सुरक्षा दें। सडक सुरक्षा संकेतावली और चिन्ह पुस्तिका सडक परिवहन और राज्यमार्ग मंत्रालय भारत सरकार सडक सुरक्षा विभाग परिवहन भवन एक सांसद मार्ग नई दिल्ली -110001 संस्करण - 2015 पेज नं.7
2. दैनिक भास्कर, डी.बी. स्टार संस्करण ग्वालियर 03.09.2016 पेज. 12
3. यातायात चिन्ह जो सुरक्षा दें। सडक सुरक्षा संकेतावली और चिन्ह पुस्तिका सडक परिवहन और राज्यमार्ग मंत्रालय भारत सरकार सडक सुरक्षा विभाग परिवहन भवन एक सांसद मार्ग नई दिल्ली -110001 संस्करण - 2015 पेज नं. 12
4. यातायात चिन्ह जो सुरक्षा दें। सडक सुरक्षा संकेतावली और चिन्ह पुस्तिका सडक परिवहन और राज्यमार्ग मंत्रालय भारत सरकार सडक सुरक्षा विभाग परिवहन भवन एक सांसद मार्ग नई दिल्ली -110001 संस्करण - 2015 पेज नं.51

Contributors Details:

1. **डॉ. (श्रीमती) साधना तोमर,** विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र
विजयाराजे कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरार ग्वालियर (म.प्र.)
2. **अनिल कुमार गोयल,** शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)